विचार बिन्दु

विश्व इतिहास में प्रत्येक महान और महत्त्वपूर्ण आन्दोलन उत्साह द्वारा ही सफल हो पाया है। –एमर्सन

मात्र चुनावी जीत के आधार पर गलत, सही नहीं हो जाता

गौतम अडानी और अडानी समूह का मामला एक बार पुनः समाचार पत्रों की सुर्खियों में है। कुछ समय पूर्व यह मामला तब उठा था, जब हिडेनबर्ग रिपोर्ट में अडानी समूह द्वारा विदेश स्थित शैल कंपनियों के माध्यम से अपने शेयरों की कीमत बहुत बढ़ाने की रिपोर्ट सामने आई थी। इसमें अडानी समूह पर कई आरोप लगे थे। यह प्रकरण उच्चतम न्यायालय तक भी गया था। उच्चतम न्यायालय ने सेबी को इस बारे में जांच करने के लिए कहा। सेबी ने अदानी समूह को क्लीन क्लीन चिट दे दी थी, जबकि कई प्रकार के आरोप प्रमुख दृष्टिया सही प्रतीत होते थे। उच्चतम न्यायालय ने इस रिपोर्ट को स्वीकार करते हुए प्रकरण को बंद कर दिया।

अब अडानी से ही सम्बंधित एक गंभीर प्रकरण फिर सामने आया है। गौतम अडानी एवं उनके भतीजे समीर अडानी के विरुद्ध अमेरिका के न्याय विभाग और सिक्योरिटी एक्सचेंज कमीशन ने, विस्तृत जांच के पश्चात, फॉरेन करप्शन प्रिवेंशन एक्ट के अंतर्गत, उन्हें दोषी माना है। उन्होंने इस जांच रिपोर्ट को सार्वजनिक किया है। यह रिपोर्ट कुल 54 पेज की है।

अडानी ने भारत में कॉन्ट्रैक्ट प्राप्त करने के लिए कई सरकारों के अधिकारियों को कुल लगभग 2000 करोड़ रुपए से अधिक की रिश्वत दी। अमेरिकी कानून के अनुसार यदि कोई उद्योग समूह अमेरिका के नागरिकों से निवेश हेतु धन एकत्रित करना चाहता है तो उसे यह स्पष्ट करना होता है कि उसके द्वारा विदेशों में किसी प्रकार की रिश्वत नहीं दी है। यदि कोई व्यक्ति या उद्योगपति अमेरिका के अलावा अन्य किसी देश में अपने उद्योग के व्यावसायिक हितों को बढ़ाने के लिए रिश्वत देता है तो वह अमेरिका के उक्त कानून के अंतर्गत अपराध है। न्यायालय में अपराध सिद्ध होने पर, इसके लिए, उसे सजा दी जा सकती है।

इसी जांच के दौरान मार्च 2023 में अमेरिका के न्याय विभाग द्वारा गौतम अडानी एवं उनके भतीजे सागर अडानी को सम्मन जारी किया गया था। सागर अडानी के परिसर पर तलाशी की गई और कई लैपटॉप आदि उपकरण जब्त किए गए। उनके विरुद्ध जांच में यह निष्कर्ष निकला कि अडानी द्वारा भारतीय अधिकारियों को रिश्वत के रूप में 2000 करोड़ से अधिक की राशि दी गई। यह राशि आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, उड़ीसा और जम्मू कश्मीर के साथ पावर सप्लाई एग्रीमेंट करने के लिए दी गई थी। अब यह प्रकरण अमेरिकी न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है और वहां के कानून के अनुसार जैसे ही अपराधिक प्रकृति का कोई प्रकरण वहां के न्यायालय में जाता है तो, अभियुक्त के विरुद्ध गिरफ्तारी वारंट जारी हो जाते हैं। इसी क्रम में गौतम अडानी, समीर अदानी एवं विनीत जैन के विरुद्ध गिरफ्तारी वारंट अमेरिका के न्यायालय से जारी कर दिए हैं। इनके चलते, अब इनमें से कोई भी अमेरिका जाएगा तो उसे वहां गिरफ्तार किया जा सकता है।

भारत सरकार ने आदेश जारी किया हुआ है कि राज्य के विद्युत निगमों को एक निश्चित दर पर भारत सरकार के उपक्रम से बिजली क्रय करनी होगी। अडानी ने आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, ओडिशा और जम्मू कश्मीर की सरकारों के साथ पावर सप्लाई एग्रीमेंट किया। क्योंकि विद्युत खरीदने की तरह बहुत अधिक थी, इस एग्रीमेंट को करने के लिए अडानी ग्रुप द्वारा संबंधित राज्य सरकारों के अधिकारियों को कुल मिलाकर लगभग 2000 करोड रुपए से अधिक की राशि रिश्वत के रूप में दी गई। अधिकतम रिश्वत 1750 करोड़ रुपए आंध्र सरकार के अधिकारियों को दी गई। इसके पूरे प्रमाण अमेरिका के न्याय विभाग ने जुटा लिए हैं। और अब न्यायालय में उनके विरुद्ध प्रकरण चलेगा। गौतम अडानी के प्रत्यर्पण की मांग भी वहां के न्यायालय द्वारा की जा सकती है।

भाजपा का यह कहना है कि रिश्वत की राशि, कॉन्ग्रेस और अन्य विपक्षी दलों की सरकारों के शासन में दी गई।

यह उल्लेखनीय है कि इन राज्यों में से केवल जम्मू एंड कश्मीर, जहां कि राष्ट्रपति शासन था और इस कारण भाजपा द्वारा संचालित है, शेष प्रदेशों में 2020 से 22 के बीच विपक्षी दलों की सरकारें थीं। उस समय आंध्र प्रदेश में वाईएसआर कांग्रेस, तमिलनाडु में डीएमके, उड़ीसा में बीजू जनता दल और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार थी।

अडानी समूह ने सिक्योरिटी एक्सचेंज कमीशन के नियमों से संचालित प्रक्रिया के अनुसार अमेरिकी निवेशको से धन एकत्रित किया। अब यदि यह न्यायालय में सिद्ध होता है कि उन्होंने भारत में रिश्वत देकर अपनी कंपनी का काम बढ़ाने का कार्य किया है, तो वे अपराधी घोषित हो जाएंगे और इन्हें सजा दी जाएगी।

प्रश्न यह नहीं है कि उन्होंने रिश्वत की राशि भाजपा शासित सरकार के समय दी या अन्य विपक्षी दलों की सरकारों के शासनकाल में दी। प्रश्न यह है कि क्या अडानी ने अधिकारियों को रिश्वत की राशि दी ?

आजकल यह प्रवृत्ति हो गई है कि चुनावी जीत के आधार पर हर अनियमित, अनुचित कार्य को सही ठहराया जाता है। किसी भी दल द्वारा चुनाव जीतने पर केवल एक ही जवाब मिलता है कि जनता ने उस पर लगे सभी आरोपों को नकार कर, उसे समर्थन दिया है। यह निष्कर्ष निकालना सही नहीं है, अपितु केवल कुतर्क है।

भारत में जब पहले इसकी शिकायत हुई थी तब सेबी ने इस बारे में वह जांच नहीं की, जो अब अमेरिका की एजेंसीज ने की है। अमेरिका द्वारा हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट का कितना प्रभाव अडानी समूह के व्यवसाय पर पड़ रहा है, यह इसी से स्पष्ट है कि केन्या सरकार ने रिपोर्ट आते ही, लगभग 6000 करोड़ का जो कॉन्ट्रैक्ट अडानी समूह को दिया जाना था, वह निरस्त कर दिया। अडानी समूह के जो बॉन्ड यहां भारत में जारी होने वाले थे, उसे भी स्थगित कर दिया गया है।

यह उल्लेखनीय कि अडानी ने सेबी को सूचित नहीं किया कि उनके विरुद्ध अमेरिका में आपराधिक प्रकरण दर्ज है, जबकि इसकी पूरी जानकारी उन्हें थी। गौतम अडानी को मार्च 2023 में ही सम्मन जारी हो चुके थे। सेबी को इस मामले में जानकारी न देना, धोखाधड़ी ही कहा जाएगा। इसके लिए उनके विरुद्ध करवाई सेबी को करनी चाहिए थी। अब इसमें वह कुछ कार्रवाई करेगा या नहीं, यह तो भविष्य ही बताएगा। किसी भी प्रकार की राशि, निवेशकों से इकट्ठा करने के लिए संबंधित कंपनी को यह घोषणा करनी होती है कि उसके विरुद्ध कोई अपराधिक प्रकरण दर्ज नहीं है। ऐसा लगता है कि सेबी को दी गई सूचना में अडानी समूह ने, अमेरिका में उनके विरुद्ध चल रही जांच का कोई उल्लेख नहीं किया। जब सुप्रीम कोर्ट ने सेबी को हिंडेनबर्ग रिपोर्ट के आधार पर जांच करने के लिए कहा था तो उसका यह दायित्व बनता था कि वह अडानी से इस बारे में स्पष्टीकरण प्राप्त करे। उसे, अमेरिका की एफ बीआई और, सिक्योरिटी एक्सचेंज कमीशन से भी इस संबंध में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए थी। ऐसा न करके, सेबी और अडानी, दोनों ने निवेशकों को गुमराह करने का कार्य ही किया है। जिस संस्था की जिम्मेदारी, निवेशकों के हितों की रक्षा करना हो, वही ऐसा न करे, तो फिर यह सवाल तो किया ही जाएगा कि ऐसा किसके इशारे पर किया जा रहा था?

सुप्रीम कोर्ट ने भी इस बारे में गहराई से जांच करने की आवश्यकता महसूस नहीं की, यह आश्चर्य की बात है। मार्च 23 में मीडिया में यह समाचार आ चुके थे कि अमेरिका में सागर अडानी के परिसर की तलाशी ली गई थी एवं उनके कई इलेक्ट्रानिक उपकरणों को जप्त किया गया था। उस समय इस तथ्य को अडानी ने सेबी एवं अन्य संस्थाओं से छुपाया एवं केवल यह बयान देते रहे कि उनके विरुद्ध कोई केस नहीं है, एवं उनके विरुद्ध हिंडेनबर्ग द्वारा लगाए गए आरोप आधारहीन हैं। सत्ताधारी दल के प्रवक्ताओं ने भी इसे देश की अर्थव्यवस्था को अस्थिर करने की साजिश तक बताया। अब, जबकि यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि अमेरिका की सिक्योरिटी एक्सचेंज कमीशन और फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन ने अपने स्तर पर जांच के बाद यह सही पाया है कि अडानी समूह द्वारा भारत में अधिकारियों को ऊर्जा आपूर्ति के समझौते करने हेतु रिश्वत की राशि दी गई, सबका झूठ सामने आ चुका है। इस बारे में, अब भी विस्तृत जांच सीबीआई और सेबी द्वारा की जानी चाहिए ताकि देश की जनता, विशेषकर निवेशकों के समक्ष स्थिति स्पष्ट हो सके। फिलहाल, अडानी समूह के लिए, इस रिपोर्ट के बाद, अब विदेशों से कहीं भी अपनी परियोजनाओं के लिए धन की व्यवस्था करना संभव नहीं होगा।

सत्ताधारी दल द्वारा यह कहा जा सकता है कि जनता इन आरोपों पर विश्वास नहीं करती है, क्योंकि यदि ऐसा होता तो, महाराष्ट्र में उसे इतना प्रचंड बहुमत नहीं मिलता। सबको यह समझने की आवश्यकता है कि चुनाव में जीत से, कोई भी गलत बात, सही नहीं हो जाती। आजकल यह प्रवृत्ति हो गई है कि चुनावी जीत के आधार पर हर अनियमित, अनुचित कार्य को सही ठहराया जाता है। किसी भी दल द्वारा चुनाव जीतने पर केवल एक ही जवाब मिलता है कि जनता ने उस पर लगे सभी आरोपों को नकार कर, उसे समर्थन दिया है। यह निष्कर्ष निकालना सही नहीं है, अपितु केवल कुतर्क है। जो बात गलत, अनुचित या अनियमित है वह केवल चुनाव जीतने से न तो सही हो जाती है न उचित हो जाती है एवं ना ही नियमित।

आम आदमी पार्टी के मुख्यमंत्री केजरीवाल ने बड़ी धनराशि खर्च करके महल नुमा आवास मुख्यमंत्री के लिए बनाया, वह गलत था और गलत ही रहेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने द्वारा घोषित नोटबंदी के बाद लोगों को अत्यधिक परेशानी होने के बावजूद भी जब उत्तर प्रदेश के चुनाव में भाजपा को भारी सफलता मिली, तो उससे नोटबंदी का निर्णय सही सिद्ध नहीं हो जाता। अडानी को संरक्षण देना गलत ही रहेगा चाहे कितना ही बहुमत, लोकसभा या विधानसभा चुनाव में भाजपा को प्राप्त हो जाए।

यह सर्वविदित है कि चुनाव जीतने के कई कारण होते हैं, जिनमें जाति-धर्म आदि प्रमुख हैं। ईमानदार सुशासन प्रदान करना, शिक्षा, स्वास्थ्य के लिए अच्छा कार्य करना एवं नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सरकार की भूमिका अच्छी तरह निभाना, यदा कदा ही चुनाव जिताते हैं। चुनावी विजय और सही-गलत का निर्णय करने हेतु पैमाने, एक नहीं हो सकते। किसी राजनीतिक दल को बहुत सफलता मिल जाए, तब भी, उनके द्वारा किए गए गलत कार्य, गलत ही रहेंगे। प्रधानमंत्री द्वारा मणिपुर पर कोई व्यक्त वक्तव्य न देना, गलत था और वह गलत ही रहेगा।

भाजपा के प्रवक्ताओं द्वारा अडानी के प्रकरण में यह कहा जा रहा है कि जब तक कोई आरोप सिद्ध नहीं हो, उन्हें दोषी नहीं माना जा सकता। यही बात तो आम आदमी पार्टी के नेता कह रहे थे, जिस समय बिना आरोप सिद्ध हुए, केजरीवाल, मनीष सिसोदिया, संजय सिंह एवं कई अन्य विपक्षी दलों के नेताओं को लंबे समय तक जेल में रखा गया। दलों को को इस संबंध में दोहरे मापदंड अपनाने से बचना होगा।

संसद का सत्र 25 नवंबर से प्रारंभ हो रहा है और यह सत्र काफी तूफानी रहने की संभावना है। अमेरिकी जांच एजेंसी की रिपोर्ट को लेकर संसद में हंगामा होना तय है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

सादा जीवन-उच्च विचारों के धनी "बापू" के शिष्य "बाबू"

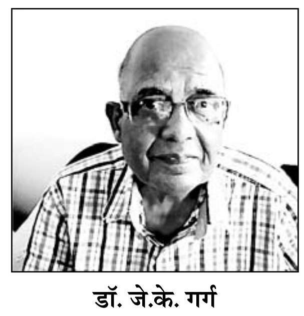

डॉ. जे.के. गर्ग

जब गांधी जी बिहार के चंपारण आये, तब उन्होंने राजेंद्र प्रसाद को स्वयंसेवकों के साथ चंपारण आने के लिए कहा। तब राजेन्द्र बाबू अनेक कार्यकर्ताओं के साथ वहां पहुंच गये। वो गांधी जी की देश भक्ति की अटूट भावना से बहुत प्रभावित हो गये हुए। बापू से मिलने के बाद राजेंद्र बाबू का नजरिया पूरी तरह से बदल गया और उन्होंने खुद को देश को अंग्रेजो की गुलामी से आजाद करने का संकल्प ले लिया, उनका दृष्टिकोण पूरी तरह बदल गया और वो आजादी की लड़ाई में पूरी तरह से जुट गये। डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में शामिल हो गये। उन्होंने भारतीय संविधान के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और देश के पहले मंत्रिमंडल में 1946 से 1947 तक कृषि और खाद्य मंत्री का दायित्व भी निभाया। उनका जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के तत्कालीन सारण जिले (अब सीवान) के जीरादेई गांव में हुआ था। उनके पिता महादेव सहाय संस्कृत एवं फारसी के विद्वान थे। माता कमलेश्वरी देवी एक धर्मपरायण महिला थीं। मात्र 12 वर्ष की उम्र में उनका विवाह राजवंशी देवी से हुआ।

कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया और 30 रुपये मासिक छात्रवृत्ति प्राप्त की। वर्ष 1902 में प्रसिद्ध कलकत्ता प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिया। बाद में वह विज्ञान छोड़ कला संकाय में आ गये और अर्थशास्त्र में एमए और कानून में मास्टर की शिक्षा पूरी की। वर्ष 1930 में नमक सत्याग्रह में भाग लिया। वर्ष 1914 में बंगाल और बिहार में आयी भयानक बाढ़ के दौरान उन्होंने पीड़ितों की खूब सेवा की। 15 जनवरी, 1934 को जब बिहार में विनाशकारी भूकंप आया, तब वे धन जुटाने और राहत कार्यो में लग गये राहत का कार्य जिस तरह से व्यवस्थित किया गया था, उसने डॉ राजेंद्र प्रसाद के कौशल को साबित किया। इसके तुरंत बाद उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया। वे वर्ष 1934 से 1935 तक भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। उन्हें 1939 में सुभाष चंद्र बोस के बाद जबलपुर सेशन का भी अध्यक्ष बना दिया गया। 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा में संविधान को पारित करते समय डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा कहे गये शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं। जिन्दगी के अंतिम पडाव में उन्होंने अपना जीवन एक आम नागरिक का भाति सदाकत आश्रम में बिताया उनके लिए राष्ट्रपति भवन और सदाकत आश्रम एकसा था। 28 फरवरी, 1963 को वों पंच महाभूतों में विलीन हो गये। राजेन्द्र बाबू ने अनेको किताब लिखी अपनी आत्मकथा (1946 बापू के कदमों में बाबू (1954, इण्डिया डिवाइडेड (1946), सत्याग्रह ऐट चम्पारण (1922), गांधीजी की देन, भारतीय संस्कृति व खादी का अर्थशास्त्र इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू और बापूजी के शिष्य के जीवन के प्रेरणादायक संस्मरण

जब परीक्षा में प्रथम आने वाले का नाम उत्तीर्ण छात्रों सूची में नहीं था :- प्रिंसिपल ने एफ.ए. में उत्तीर्ण छात्रों के नाम लिए तो राजेन्द्र प्रसाद का नाम उस सूची में नहीं था। राजेन्द्र प्रसाद एक मेधावी छात्र थे उन्हें अपने आपको फेल होने पर रत्तीभर भी विश्वास नहीं हुआ क्योंकि उन्हें अपनी एफ.ए. की परीक्षा में सर्वोच्च अंकों के साथ उत्तीर्ण होने का पूरा भरोसा था, इसलिए उन्होंने खड़े होकर प्राचार्य से कहा कि वे फेल नहीं हो सकते हैं इसलिए उन्होंने प्रिंसिपल से परीक्षा में हुए उत्तीर्ण विद्यार्थियों की सूची को एक बार पुन: देख लेंने का अनुरोध किया, जिससे प्रिंसिपल ने क्रोधित होकर राजेन्द्र प्रसाद से कहा कि वह फेल हो गए होंगे अत: उन्हें इस मामले में तर्क नहीं करना चाहिए। राजेंद्र घबराते हुए बोले 'लेकिन, लेकिन सर' क्रोधित प्रिंसिपल ने कहा, 'पाँच रुपये ज़ुर्माना' राजेन्द्र प्रसाद साहस कर दोबारा बोले तो प्रिंसिपल चिल्लाये और बोले 'दस रुपया ज़ुर्माना'। राजेन्द्र प्रसाद बहुत घबरा गए। अगले कुछ क्षणों में ज़ुर्माना बढ़कर 25 रुपये तक पहुँच गया। एकाएक हैड क्लर्क ने राजेन्द्र को पीछे से बैठ जाने का इशारा किया और वे प्रिंसिपल से बोले कि सर एक गलती हो गई है, वास्तव में राजेन्द्र प्रसाद परीक्षा में प्रथम आए हैं। राजेन्द्र प्रसाद की छात्रवृत्ति दो वर्ष के लिए बढ़ाकर 50 रुपया प्रति मास कर दी गई। उसके बाद स्नातक की परीक्षा में भी उन्हें सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ। इस घटना के बाद राजेन्द्र प्रसाद ने यह जान लिया था कि आदमी को अपना संकोच को दूर कर आत्मविश्वासी बनना चाहिए।

कॉलेज में भोले भाले देहाती राजेन्द्र बाबू का पहला दिन सरल एवं निष्कपट स्वभाव वाला सीधा-साधा ग्रामीण युवक राजेन्द्र प्रसाद बिहार पहली बार 1902 में कलकत्ता में प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश हेतु आया था। अपनी कक्षा में जाने पर वह छात्रों को ताकते रह गये क्योंकि वहां सभी छात्र नगें सिर एवं सभी पश्चिमी वेशभूषा की पतलून और कमीज पहने थे इसलिये उन्होंने सोचा ये सब एंग्लो-इंडियन हैं किन्तु जब हाजिरी बोली गई तो राजेन्द्र को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वे सभी हिन्दुस्तानी थे। जब राजेन्द्र प्रसाद का नाम हाजिरी के समय नहीं पुकारा गया तो उन्होंने हिम्मत जुटा कर अपने प्रोफेसर को पूछा कि उनका नाम क्यों नहीं लिया गया। प्रोफेसर उनके देहाती कपड़ों को घूरता ही रहा एवं चिल्ला कर बोला– ठहरो, मैंने अभी स्कूल के लड़कों की हाजिरी नहीं ली है। राजेन्द्र प्रसाद ने हठ किया कि वह प्रेसीडेंसी कॉलेज के छात्र हैं और उन्होंने प्रोफेसर को अपना नाम भी बताया। अब कक्षा के सभी छात्र उन्हें उत्सुकतावश देखने लगे क्योंकि उस वर्ष राजेन्द्र प्रसाद विश्वविद्यालय में प्रथम आये थे, प्रोफेसर ने तुरंत अपनी गलती को सुधार कर ससम्मान उनका नाम पुकारा और इस तरह राजेन्द्र प्रसाद के कॉलेज जीवन की शुरुआत हुई।

एक बार राजेंद्र बाबू नाव से अपने गांव जा रहे थे। नाव में कई लोग सवार थे। राजेंद्र बाबू के नजदीक ही एक अंग्रेज बैठा हुआ था। वह बार-बार राजेंद्र बाबू की तरफ व्यंग्य से देखता और मुस्कराने लगता। कुछ देर बाद अंग्रेज ने उन्हें तंग करने के लिए एक सिगरेट सुलगा ली और उसका धुआं जान बूझकर राजेंद्र बाबू की ओर फेंकता रहा। कुछ देर तक राजेंद्र बाबू चुप रहे। लेकिन वह काफ़ी देर से उस अंग्रेज की इस हरकत को सहन नहीं पाये। उन्हें लगा कि अब उसे सबक सिखाना जरूरी है। कुछ सोचकर वह अंग्रेज से बोले, 'महोदय, यह जो सिगरेट आप पी रहे हैं क्या आपकी ही है?' यह प्रश्न सुनकर अंग्रेज व्यंग्य से मुस्कराता हुआ बोला, 'अरे, मेरी नहीं तो क्या तुम्हारी है? महंगी और विदेशी सिगरेट है।' अंग्रेज के इस वाक्य पर राजेंद्र बाबू बोले, 'बड़े गर्व से कह रहे हो कि विदेशी और महंगी सिगरेट तुम्हारी है। तो फिर इसका धुआं भी तुम्हारा ही हुआ न। उस धुएं को हम पर क्यों फेंक रहे हो? तुम्हारी सिगरेट तुम्हारी चीज है। इसलिए अपनी हर चीज संभाल कर रखो। इसका धुआं हमारी ओर नहीं आना चाहिए। अगर इस बार धुआं हमारी और आया तो सोच लेना कि तुम अपनी जुबान से ही मुकर रहे हो। तुम्हारी चीज तुम्हारे पास ही रहनी चाहिए, चाहे वह सिगरेट हो या इसका धुआं, राजेन्द्र बाबू की बात को सुनकर बेचारा अंग्रेज सकपकाया और उसने अपनी जलती हुई सिगरेट को बुझा दिया।

भारतीय संविधान के लागू होने से एक दिन पहले 25 जनवरी 1950 को उनकी सगी बहन भगवती देवी का निधन हो गया, लेकिन वे भारतीय गणराज्य के स्थापना की रस्म के बाद ही दाह संस्कार में भाग लेने गये। राष्ट्रपति बनने पर भी उनका जनसाधारण एवं गरीब ग्रामीणों से निरंतर संमर्र्क बना रहा। वृद्ध और नाज़ुक स्वास्थ्य के बावजूद उन्होंने भारत की जनता के साथ अपना निजी सम्पर्क कायम रखा। वह वर्ष में से 150 दिन रेलगाड़ी द्वारा यात्रा करते और आमतौर पर छोटे-छोटे स्टेशनों पर रूककर सामान्य लोगों से मिलते और उनके दुख दर्द दूर करने का प्रयास करते।

उन दिनों डॉ. राजेन्द्र प्रसाद देश के गिने-चुने नामी वकीलों में गिने जाते थे। उनके पास मान-सम्मान और पैसे की कोई कमी नहीं थी। लेकिन जब गांधी जी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया तो राजेन्द्र बाबू ने वकालत छोड़ दी और अपना पूरा समय मातृभूमि की सेवा में लगाने लगे। अपने मित्र रायबहादुर हरिहर प्रसाद सिंह के मुकदमों की पैरवी के लिए उन्हें इंग्लैण्ड जाना पड़ा। वरिष्ट बैरिस्टर अपजौन इंग्लैंड में हरिहर प्रसाद सिंह का मुकदमा लड़ रहे थे उन्हीं के साथ राजेन्द्र बाबू को काम करना था। अपजौन राजेन्द्र बाबू की सादगी और पारिवारिकता से बहुत प्रभावित हुए। एक दिन किसी ने अपजौन को कहा कि राजेंद्र बाबू भारत के सफलतम वकीलों में से हैं किन्तु उन्होंने भारत को स्वतंत्र कराने हेतु अपनी वकालत त्याग दी है और वे असहयोग आन्दोलन में गांधीजी के निकटतम सहयोगी बन गये हैं। बैरिस्टर अपजौन को आश्चर्य हुआ

-डॉ. जे. के. गर्ग,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

चंबल नदी की दाईं मुख्य नहर में रिसाव के कारण खेत जलमग्न

कोटा, (निसं)। चंबल नदी की दाईं मुख्य नहर में रिसाव के कारण भारी मात्रा में पानी खेतों में पहुंच गया है। बड़ी मात्रा में खेत भी जलमग्न हो गए हैं और नहर को बंद करने तक की नौबत आ गई। बाद में नहर में पानी का डिस्चार्ज कम करते हुए रिसाव को रोकने के लिए प्रयास शुरू किए गए। मामला कोटा जिले के दीगोद के नजदीक देवपुरा का है। ग्रामीणों ने इस संबंध में प्रशासन और चंबल कमांड एरिया (सीएडी) के अधिकारियों को सूचना दी।

दीगोद एसडीएम दीपक महावर का कहना है कि सूचना मिलते ही सीएडी के अधिकारियों को मौके पर तुरंत जाने के लिए कहा और उचित दिशा-निर्देश दिए गए। मौके पर पहुंचे सीएडी के इंजीनियर ने बताया है कि रिसाव के चलते पानी का डिस्चार्ज आधा कर दिया है। खेतों में पानी नहीं जाए, इसके पूरे जतन किए जा रहे हैं। यह रिसाव रात से थोड़ा-थोड़ा शुरू हुआ था

- **किसानों का आरोप है कि नहरों की समय पर गुणवत्तापूर्वक मरम्मत नहीं होने के चलते समस्या आती है**

जो कि सुबह बढ़ गया। सुबह ही प्रशासन को इसकी जानकारी मिली थी।

किसान विनोद मेहरा का कहना है कि सुबह छह बजे लोगों ने देखा कि पानी खेतों में जा रहा है। नहर टूटी नहीं है लेकिन नहर की पाल के नीचे से रिसाव हुआ है। यह पानी आसपास के खेतों में भर गया है जिसकी चपेट में लगातार खेत आते जा रहे हैं। इनमें से कई खेत ऐसे हैं जिनमें फसल की बुवाई कर दी गई थी जबकि कुछ में बुवाई की तैयारी चल रही थी। अधिकांश किसानों ने लहसुन व गेहूं की बुवाई की है। किसान तत्काल रिसाव को बंद करने की मांग कर रहे थे।

दीगोद के नजदीक देवपुरा में चंबल नदी की दाईं मुख्य नहर में रिसाव के कारण खेतों में पानी भर गया।

चंबल नदी में दाईं मुख्य नहर में अनुबंध के तहत मध्यप्रदेश को वर्तमान में पानी भेजा जा रहा है। ऐसे में मध्यप्रदेश और राजस्थान के टेल एरिया के किसानों को भी भरे सीजन में पानी नहीं पहुंचने की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। किसानों का आरोप है कि नहरों के समय पर गुणवत्तापूर्वक मरम्मत नहीं होने के चलते ही यह समस्या आती है।

सेमेस्टर में आधे छात्रों को फेल करने पर विरोध

अलवर, (निसं)। अलवर शहर के आरआर कॉलेज में बीएससी सैकंड ईयर के सैकंड सेमेस्टर के रिवाइज घोषित रिजल्ट में आधे छात्रों को फेल करने के विरोध में छात्रों ने कॉलेज गेट बंद कर विरोध किया। इसके अलावा चेतावनी दी है कि अभी विरोध सांकेतिक है उनका दुबारा एग्जाम नहीं हुआ तो आगे उग्र आंदोलन किया जाएगा।

छात्रनेता अंकित गुर्जर ने बताया कि करीब डेढ़ माह पहले बीएससी फर्स्ट ईयर के सेकंड सेमेस्टर का रिजल्ट घोषित कर स्टूडेंट्स को प्रमोट किया था, ताकि यह सेकंड ईयर में बैठ सके, लेकिन अब डेढ़ महीने बाद दोबारा से रिजल्ट घोषित किया। नई शिक्षा नीति का हवाला देकर आधे से

- **छात्रों ने दुबारा एग्जाम नहीं होने पर उग्र आंदोलन की बात कही**
- **नई शिक्षा नीति का हवाला देकर छात्रों को फेल किया**

ज्यादा करीब 400 स्टूडेंट्स को फेल कर दिया। इस विषय पर कॉलेज प्रशासन से बातचीत करना चाहा तो उन्होंने नई शिक्षा नीति का हवाला देकर ऐसा करना बताया। अभिषेक जायसवाल ने बताया कि जब शुरुआती तौर पर फॉर्म भरे गए थे तब नई शिक्षा नीति की कोई जानकारी नहीं दी गई। करीब डेढ़ महीने पहले जिनको प्रमोट कर दिया। अब वापस उनका रिजल्ट देकर फेल दिखा दिया। हमारी मांग है कि जिनको फेल किया है उनका दुबारा एग्जाम हो, ताकि स्टूडेंट्स को नुकसान नहीं हो। ऐसा नहीं हुआ तो स्टूडेंट्स उग्र आंदोलन करने को मजबूर होंगे। जिसका जिम्मेदार यह कॉलेज प्रशासन रहेगा।

राशिफल मंगलवार 26 नवम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, हस्त नक्षत्र रात्रि 4:35 तक, प्रीति योग दिन 2:13 तक, बव करण दिन 2:25 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग रात्रि 3:48 तक है। द्विपुष्कर योग रात्रि 4:35 से सूर्योदय तक है। राजयोग रात्रि 4:35 से आरम्भ होगा। आज बुध वक्री प्रात: 8:13 से होगा। आज उत्पन्न (वेतरणी) एकादशी, पदम प्रभु मोक्ष दिन है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:36 से 10:55 तक, लाभ-अमृत 10:55 से 1:33 तक, शुभ 2:52 से 4:10 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:59, सूर्यास्त 5:29

मेष

स्वास्थ्य से संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

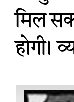

वृष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

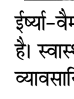

मिथुन

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

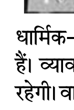

कर्क

परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। सुख-सुविधाओं पर धन खर्च होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

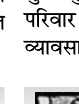

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। शुभ कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

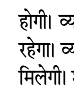

तुला

व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

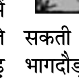

वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

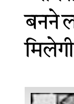

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

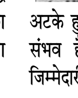

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

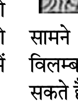

मीन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।